सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजयख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, सितम्बर-अक्टूबर 2018

पवित्रात्मा और तुम्हारे जीवन में आग

'मैं तो तुम्हें पानी से मन-फिराव के लिए बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे पश्चात्त आ रहा है - वह मुझ से इतना अधिक सामर्थी है कि मैं उसकी जूती भी उठाने के योग्य नहीं हूँ - वह स्वयं तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।' (मत्ती 3:11)

यहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मन-फिराव के बारे में बात कर रहा है। पश्चाताप मसीही जीवन का आरंभ है। मगर जब हम आगे बढ़ते है, अपने अंदर हम कूड़ा करकट पाते है। जिन मूर्तियों को हमने स्थान दिया था वे हमारे अंदर काफी मलिनता छोड़ जाती हैं।

'तब मैं तुम पर शुद्ध जल छिडकूंगा और तुम शुद्ध हो जाओगे, मैं तुम्हें तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूर्तियों से शुद्ध करूँगा। (यहेजकेल 36:25) इस अशुद्धता से धुल जाना हमारे लिए जरूरी है। परमेश्वर ने इसका

पवित्रात्मा और... पृष्ठ 3 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

*हर **रविवारसुबह 7:30 से 8:00** बजे*

यीशु का घर - प्रार्थना का घर

मेरा घर सब जातियों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा। (मरकुस 11:17)

यदि हम रास्ते में किसी व्यक्ति से पूछें कि प्रार्थना का घर कहाँ है? मुझे आश्चर्य होगा कि वह इस प्रश्न का क्या उत्तर देगा। शायद वह एक जगह को दिखाएगा जहाँ जादू-मंत्र किया जाता हो या जादू-टोने द्वारा सलाह दी जाती हो। उसे ही वह प्रार्थना का घर कहेगा।

बहुत से देशों में प्रार्थना के घर की सही धारणा पूरी तरह से विलुप्त हो गयी है। एक घर में एक तरह का या दूसरी तरह का उत्सव होता हो जहाँ भक्त अपने शरीर में भस्म लगा कर और चमकीले रंगो से शरीर को लेप लगाते हैं तथा घर जहाँ से मंत्रों की आवाज आसानी से सुनी और समझी जाती है। हाँ, आप उसे प्रार्थना का घर कहेंगे। किन्तु प्रार्थना का घर क्या है? या एक व्यक्ति उसे कहाँ पायेगा? निश्चय, यह आधुनिक मसीहत में नहीं मिलेगा।

संयुक्त राज्य अमेरिका मे कोई व्यक्ति मुझे एक बहुत सुन्दर चर्च बिल्डिंग दिखाने गया। वह विभिन्न रंगों और पालिश से जगमगा रहा था। हर चीज बहुत सुन्दर रंग से सजायी गयी थी। तथा इस पर बहुत अधिक खर्चा किया गया था। किसी ने कहा एक या दो करोड़पति यहाँ आराधना के लिये आते हैं। इस भवन के भीतर दीवारों पर संतों के सुन्दर चित्र बने है। हर सप्ताह केवल एक ही सभा होती है और वह भी केवल रविवार की सुबह को। उसके बाद कोई भी सभा बीच सप्ताह मे नही होती है।

एक चर्च बिना प्रार्थना सभा के निर्जीव, मरी हुई, चर्च है। आप और आपके बच्चे किसी भी ऐसी प्रार्थना रहित चर्च से हमेशा बने रहने वाला मूल्य नहीं पा सकते हैं।

चर्च कैसे जाना जाता है। विश्वासियों का शरीर ही चर्च कहा जाता है। जो यीशु मसीह के द्वारा पापों की क्षमा पाते है। पापों से छुटकारा पातें हैं। उनके हृदय से निकली प्रार्थना प्रभावशाली होती है। उसके साथ ही एक दूसरे के साथ सच्चा और स्नेहपूर्ण सहभागिता का आनन्द उठाते हैं।

जहाँ सच्चा प्रेम होता है। वहां हमेशा एक दूसरे के साथ शुद्ध संबंध होता है। तथा हृदय को छुने वाली प्रार्थना भी होती है। यही चाहत यीशु मसीह उस मंदिर में देखना चाहते थे। परन्तु, हाय! वे केवल भेड़ों के मिमियाने, कबूतर की गूटर गूं ही सुन पा रहे है। जिसे बलि के लिये बेचा जाना है।

प्रबल और कोलाहल पूर्ण जगह में चीजों की खरीद बिक्री के लिये मोलभाव किये जा रहे है। पैसों के लेन देन में सिक्कों की खनखनाहट सुनाई दे रही है। आप अच्छी तरह कल्पना कर सकते है कि प्रभु यीशु के लिये यह कैसा दिल को धक्का पहुंचाने वाला और दुःख देने वाले

कर्कश शोरगुल है।

'सभी लोगों के लिये मेरा घर, प्रार्थना का घर, कहलायेगा।' यीशु मसीह ने जीवित परमेश्वर के मंदिर को प्रार्थना का घर कहा। परन्तु वहां पर न प्रार्थना का वातावरण था और न प्रार्थना करने का इरादा था। उद्धारकर्त्ता का हृदय वेदना औऱ घृणा से भर गया था औऱ उन्होने दुःख से कहा, "तुम लोगों ने मेरे घर को डाकुओं की खोह बना दिया है।"

मैं नहीं जानता कि कैसे व्यापार संबंधी बातें और पैसों का अभिप्राय धीरे-धीरे और अदृश्य रूप से धार्मिक बातों से संबंधित हो गया। बहुत जल्दी बड़े पैमाने में यह सब फाँसी का फंदा बन जायेगा और निश्चय ही उस लक्ष्य से नीचे गिरा देगा। जहां प्रार्थना नही होती वहां झगड़े और बहस होती है। पहले जहां भक्तिमान और धार्मिक लोग थे। वहां बेईमान और चतुर लोग तथा सच्चाई को छिपाने वाले उस जगह को ले लेते है। इसके पश्चात, यहां हृदय रहित वाणिज्य व्यापार का शासन होता है। जिसे वे आत्मिक संस्था कहते हैं। ऐसी जगह जहां थके-मादें और टूटे हृदय वाले परमेश्वर द्वारा शांति और आराम पाने की इच्छा करते हैं।

मुझे निश्चय है कि आज भी सही सोचने रखने वाले व्यक्ति मौजूद हैं। जो सचमुच से उन तरीकों से थक गये है। जिनके द्वारा आराधना के धार्मिक स्थल को पैसा कमाने वालों का केन्द्रस्थल बना दिया गाया है। ये धार्मिक स्थल, जोवन की पवित्रता को बढ़ावा नहीं देते है। बल्कि अनैतिकता का गर्म बिछौना बना दिये हैं और अधर्म का क्षेत्र बन गाया है। ठग और घूस लेने वाले यहां प्रार्थना करने और पश्चाताप करने नहीं आते है। वरन धार्मिक प्रणाली के लिये अपना मुल्यांकन प्रगट करने और, भक्त, जैसा कि वे अपने को महसूस करते हैं कि उनकी तिजोरी पैसों से भरी हो चाहे वे लापरवाह होकर गलत तरीकों द्वारा धन इकट्ठा करें।

जीवित परमेश्वर का मंदिर प्रार्थना का घर है। जहां पाप को डांटा जाता है। जिस से व्यक्ति का पूरी तरह परिवर्तन हो जाता है। वह व्यक्ति जो शराब का आदी है वह शराब से घृणा करने लगता है। और बेईमान व्यक्ति सरल जीवन जीने लग जाता है। उनका जीवन बदल जाता है। यह रूपान्तरण या नया जीवन, ग्रहण करने वाले के जीवन में गहराई तक व्याप्त हो जाता है। जहां वह एक पिता की तरह असफल था, वहां वह क्षति पूर्ति करना आरंभ कर देता है। घर बिगाड़ने के बदले घर बनाने वाला बन जाता है। चाहे वह जहां कहीं भी जाये, एक व्यक्ति जिस पर एक सच्चे और विश्वासयोग्य पति की तरह भरोसा किया जा सकता है। हाँ यीशु से मिलने पर आपका जीवन बदल जाता है, जो आपको रोमांचित करता है। औऱ आपके लिये अदभुत बन जाता है।

इस चित्र के दूसरे पहलू में आप एक व्यक्ति को देखते हैं। कि धार्मिक त्यैहारों पर उनकी धारणायें फूहड किस्म की होती है। उन्होंने पहले कभी नहीं सुना कि मंदिर में प्रार्थना करने का दृढ़ संकल्प लेकर और परमेश्वर के सामने अपने को ठीक (सही) करने के लिए दर्शन करने गये है। आज की दुनियां में बहुत से लोगों के लिये इस प्रकार का संकल्प अनोखा और पूरी तरह से उलटा नज़र आता है।

जब मैं रोम के वैभवशाली संत पीटर के क्षेत्र से गुजर रहा था। मैंने पाया कि दर्शनार्थियाँ का झुंड उस जगह के चारों ओर टहल रहा था। वे उन लोगों की थोडी भी परवाह नहीं कर रहे थे जो धार्मिक दिनचर्या का पालन उस छोटे से घेरे में करते थे। यह दृश्य जिसमें अनादर और ईश्वरहीनता दिखाई देती है देखकर मेरा हृदय टूट गया। क्या यह केवल एक प्रभावशाली और भव्य स्मारक देखने के लिये आये हैं? नहीं, हमारा एक महान परमेश्वर है जो पापियों को बदलता है। उन्हें प्रार्थना करना सिखा और परमेश्वर के जन बना तथा पाप से नष्ट हुआ तथा टूटे-बिखरे हुए घर का पुनः निर्माण करें। परमेश्वर केवल ईट और सिमेंट के बने घर में नहीं रहते है।

बहुत से लोग दूर यात्रा कर एक प्रसिद्ध सोने द्वारा बनी मूर्ति की केवल एक झलक पाने के लिये घंटो लम्बी कतार में खड़े अपनी बारी का इंतजार करते हैं। एक युवक ने मुझसे कहा कि वह दिन दुपहरी निर्लज्जता के अपवित्र कार्यों में लिप्त रहा। उसका इस कल्पित मंदिर में आने का कारण केवल उसके अनियंत्रित पशुवत व्यवहार पर अंकुश लगाना था। सचमुच में यह चोरों की गुफा है। जहां व्यक्तियों का सदाचार नष्ट करना और स्त्रीयों का शील भंग करना ही होता है।

यह ऐसे दिखता है जैसे धर्म के नाम पर कुछ भी किया जा सकता है। यह कितना दुःखदायी अनुभव है। यीशु मसीह दुनिया में आये कि मानव जाति के पापों

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books, Lal Building, Goa Street, Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

के लिए अपना प्राण दें। यह हृदय को चूर-चूर कर देने वाली बात है। अपने दिनों में जब उन्होंने मंदिर को देखा, जहां प्रार्थना और सच्ची भक्ति न थी। फिर भी वे इस दृश्य को देख जो दुष्टता से भरा था निष्क्रिय न हुए। पर उन्होंने जीवित परमेश्वर के मंदिर से दुष्टों को निकाल कर उसे साफ किया।

जब हम यीशु के लहू से धोये जाते है। परमेश्वर की पवित्रता गतिशील होकर हमें पकड़ती है। अपवित्रता और दुष्टता जो हमारे चारों ओर है, वह शर्म से अपना सिर झुकाकर और छिप कर भाग जाती है। आज की मसीहत में ज़रूर कुछ भारी गल्तियां हैं जिससे हम अपने चारों ओर के समाज को बदल नहीं पाते हैं। और जीवन में पवित्रता का कोई अस्तित्व नहीं है।

जब यीशु मसीह उनके हृदय में आते हैं, चोर और घूस लेने वाले परिवर्तित होकर आत्माओं को जीतने वाले बनते हैं। इस दृश्य में जहां पहले आत्मिक सूनापन और नैतिक दिवालिया था अब बदल कर आत्मिक जागृत और नयापन आ जाता है। जब आप क्रूसित और जी उठे यीशु के सामने पश्चाताप करते हैं। जो आपको शुद्ध करने और ग्रहण करने को तैयार है।

ओह! जीवित उद्धारकर्ता आप के घरों और देशों में शुद्ध करने को आत्मिक जगृति की लहर को भेजें।

- जोशुआ दानिएल।

पवित्रात्मा और... पृष्ठ 1 से

इन्तजाम भी कर रखा है। यीशु आपको पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देंगे।

जब यशायाह को परमेश्वर के आमने-सामने लाया गया, उन्होंने अपने आप को बहुत अयोग्य पाया। तब वह पुकार उठा कि वह एक अशुद्ध होंठवाला मनुष्य है। उसे शुद्ध किये जाने की जरूरत थी। और परमेश्वर ने अपने भव्य सिंहासन के सामने स्थित वेदी पर से अंगारा ले उसे शुद्ध किया था।

अपने मुंह से शाश्वत वचन बोलने के लिए हमारे होंठ योग्य नहीं हैं। ऐसी मलिनता से हमें शुद्ध करने के लिए परमेश्वर समर्थ है।

मन-फिराव के समय आपको लगता है कि आप एक आशाहीन पापी हो। मन-फिराव के बाद, दुबारा आप ऐसा महसूस करोगे, जब परमेश्वर की उपस्थिति और उनका वचन, आपके अंदर जमे कूड़े करकट को आप के सामने अनावृत करे, तो आप दुबारा निर्भीक महसूस करोगे। क्या हम परमेश्वर के वचन का प्रचार करने योग्य है? नहीं, हम में बहुत कूड़ा करकट है। मगर उससे शुद्ध करने का, परमेश्वर ने प्रबन्ध किया है। जब पवित्र आत्मा और पवित्र आत्मा की आग हम में प्रवेश करती है, तो वह सारी अशुद्धता दूर हो जाती है।

मगर केवल एक ही बार ऐसा अनुभव काफी नहीं है। जब कोई वैवाहिक जिम्मेवारी में प्रवेश करता है तो उसे और बढ़कर आग से शुद्ध किये जाने की अवश्यकता है। फिर जब उसके बच्चे पैदा होते हैं तो फिर उस आग का एक और स्पर्श जरूरी है। यह विनम्र भाव हम में बना रहे और वह अपना कार्य हम में करता रहे। हम एकाग्र बने रहे। यीशु ने पतरस से गहरे जल में प्रवेश करके प्रयास करने के लिए कहा। अध्यात्मिक जीवन में हमें भी गहराई में जाकर तब दाहिने ओर जाल डालना है। इसका अर्थ यही कि परमेश्वर की जहाँ इच्छा हो, वहाँ हम अपना जाल डालें। परमेश्वर यह देख रहे है कि एक उच्च स्तरीय जीवन जीने की क्या हम में आशा है। - जो यीशु का जीवन है!

लगता है कि यशायाह और एलिय्याह में ऐसी इच्छा है जो पूरी भी हुई। परमेश्वर ने उनकी इच्छा पूरी की। एक गहरे अध्यात्मिक जीवन से आशीषित करने के लिए, परमेश्वर हमारी व्यक्तिगत श्रद्धा और समर्पण को बहुत ध्यान से देख रहे हैं।

- एन. दानिएल।

एक भयानक प्रार्थना

हल चलाने वाले एक लड़के की यह कहानी बतायी जाती है। अपनी आत्मा को लेकर वह चिंतित था। वह जानता था कि वह एक पापी है। एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर से मिलने योग्य वह नहीं है, यह बात भी उसे मालूम थी। वह इस बात पर विश्वास करता था कि खुशी की एक जगह है और दुःख की भी जगह है। अपनी इस वर्तमान स्थिति में, नरक में ही उसका विनाश होगा। वह जानता था कि पिता परमेश्वर, पुत्र और पवित्र आत्मा - सबका उध्दार चाहते हैं और इसलिए उसका उध्दार भी चाहता है। (1 तीमुथियुस 2:1-6) पवित्र आत्मा ने उसके साथ बहुत संघर्ष किया। मगर उसने इस दोषारोपण को दबा दिया। वह यीशु मसीह को ग्रहण करना तो चाहता था मगर उसी वक्त नहीं। मरने के बाद कोई दूसरा मौका नहीं मिलेगा - बाइबल की इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानता था। पवित्र आत्मा का विरोध करना और उनके बुलावा को ठुकराने वाले भयानक पाप करने का वह दोषी था।

एक दिन अपनी आध्यात्मिक स्थिति को लेकर वह बहुत व्याकुल हो उठा कि उसने यह भयानक प्रार्थना की: 'हे परमेश्वर! मैं इस समय उध्दार नहीं पाना चाहता हूँ; आपके पवित्र आत्मा को मुझ से दूर करो।' और अपना काम करने वापस लौटा। उस समय से, वह अपनी आत्मा के उद्धार के विषय में पूरी तरह से लापरवाह लगता था।

मृत्युशय्या पर लेटे, वह अब उस घातक दिन को याद कर रहा था जब परमेश्वर के महान उद्धार को उसने ठुकराया था। बिच्छू के डंक की भांति विवेक उसे छेदने लगा।

परमेश्वर, मरा और पुनः जी उठा, अपने पुत्र का मोल देकर, उध्दार प्रदान किया। आपका उध्दार आपकी स्वीकृति पर अब आधारित है। मगर उसे स्वीकारने के लिए परमेश्वर आप पर दबाव नहीं डालेंगे। यदि आप उसका टालना जारी रखते हो, अचानक अपने पापों में ही काटकर गिराये जाओगे। अब और देरी मत करो, क्योंकि जीवन अत्यंत अनिश्चित है। 'स्वीकृति का अभी समय है;' कल शायद बहुत देर हो चुकी होगी।

'जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उध्दार पाएगा।' (रोमियों 10:13)

'प्रभु यीशु पर विश्वास करे तो तू और तेरे घराना उध्दार पाएगा।' (प्रेरितों के काम 16:31)

- हेन्री पिकरिंग कृत 100 त्रिल्लिंग टेल्स से चुनी हुई।

एक सफेद गुलाब की कहानी

लंदन में, एक शाम की बात थी। एक आदमी सुसमाचार सभा में संदेश देने जा रहा था। थेम्स नदी के किनारे के साथ साथ जाने वाले रास्ते से वह हड़बड़ी में जा रहा था। हॉल से कुछ सौ गज की दूर पर था, तो उसने एक जवान औरत को देखा। वह शोक भरी गहरे विचारों में खोई हुई थी। इस आदमी का ध्यान उसकी तरफ आकर्षित हुआ। पहले तो उसने हिचकिचाया मगर उससे बात करने के लिए प्रेरणा महसूस की। जाहिर बे-अदबी के लिए माँफी माँगते हुए उसे संबोधित किया। पास ही में हो रही सभा में आने के लिए न्यौता दिया, ये कहते हुए कि किसी भी समय पर सभा में से वो उठकर जा सकती हैं, कोई भी उसे जाने से नहीं रोकेगें। एक कप गरम कॉफी और ब्रेड मिलेगा, ये भी वादा किया।

उस जवान महिला ने उसके दखल देने का क्रोध से विरोध किया और उसके न्यौते का भी इंकार कर दिया। इस भेंट से कुछ ही समय पहले, उस आदमी ने एक औरत के साथ चाय-पान किया था। उस महिला ने उसे एक सफेद गुलाब भेंट में दिया और उसे रखने के लिए अनुरोध किया। ऐसा लगा कि कुछ अदृश्य शक्ति ने उसे मजबूर किया और इसलिए वह मान गया। कोट पर लगे उस गुलाब को निकालते हुए मुड़कर उस युवती से आग्रह किया कि क्या वह उसे स्वीकार करेगी? आखिरकार नवयुवती ने उस सुन्दर फूल को हाथ में लिया। उस आदमी ने गली में लगे खम्बे की रोशनी में उसका दुखी चेहरा और आँखों से निकलते आँसू को देखा। सभा का हॉल किस गली में है, उसका पता देकर अलविदा कहते चला गया। उनको फिर भी यह आशा थी कि वह जरूर सभा में हाजिर होगी।

ततपश्चात उस शाम सज्जन ने जब सभा में बोलना खत्म किया, हॉल में उस नवयुवती को देखा। वह मानो कुछ कहने की इच्छा से वहाँ खड़ी हो गयी। मगर डरी हुई थी। फिर भी उसने अपनी कहानी सुनाई।

वह पाँच साल से अनैतिक जीवन जी रही थी। अपमानजनक और अतिअधम पाप में वह जी रही थी। नदी किनारे उस समय वह खड़ी निर्णय ले रही थी कि उस अनीति के जीवन में पुनः लौट जाये या फिर थेम्स नदी में कूद कर सब बात का अंत करे। जब उस सज्जन ने उस से बात की, तब तक वह सब कुछ सोच विचार अपने आप को मारने का निर्णय ले चुकी थी कि अपने आप को डुबाने का इस दुष्ट विचार को सज्जन की बातों ने विह्वल किया। बार बार उसे सभा में आने के लिए जोर देना और उसका इनकार, फिर उसने पूछा कि क्या वह एक सुन्दर सफेद गुलाब को स्वीकार करेगी। पाप से भरी लंदन नगरी से दूर, उत्तरी इंगलैंड में अपने गाँव के घर में, पाँच साल पहले उस शुद्ध सफेद गुलाब के फूल को उसकी विधवा माँ ने उसे दिया था। उसकी माँ का वह मनपसंद फूल थी। माँ ने बोला था, 'एलन, मेरी प्रिय बच्ची, तुम अपनी गरीब, अकेली माँ को छोड़कर जा रही हो। उसकी इच्छा के विरुध्द जा रही हो। मुझे डर है कि तुम पाप की तरफ, भटक रही हो। मगर जब तुम उससे दूर हो और जब कभी एक सफेद गुलाब को देखो तो यह बात जरूर याद कर लेना कि जुदाई के समय तेरी माँ की दी हुई इस भेंट के साथ साथ उसकी प्रार्थना भी होगी। इस पापी बच्ची की वापसी के लिए उत्कंट प्रार्थना हमेशा उसका पीछा करेगी। ना दिन और ना ही रात, मैं तेरे लिए प्रार्थना करना बंद करूँगी कि परमेश्वर तुम को एक उध्दार पाई हुई बच्ची बनाकर घर वापस ले आये।'

युवती एलन, अपनी माँ और उसकी बातों को हमेशा याद करती थी। कई बार वह अपनी विवेक को दबाती। और उस रात जब वह भयानक कदम लेने जा रही थी, उसने अपनी माँ को याद किया। 'मैं परमेश्वर से माँगती हूँ। आज मेरे इस कदम से उसको कितना दुःख पहुँचाया होता,' उसने कहा। 'शुध्द, मिठास भरा ये गुलाब का फूल मुझे अपने होश में लाया। मैं उसे देखती रही, उसे चूमा और रो पड़ी। इस सभा में आने से अपने आप को रोकने में असमर्थ रही। 'यीशु के पास आना, इस न्यौते को मैं सुन

सत्य की परख!

जिसके पास पुत्र है उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं उसके पास वह जीवन भी नहीं। (I यूहन्ना 5:12)

रही थी। और उध्दार पाये बिना यहाँ से चले जाने का साहस मैं नहीं कर पाऊँगी; सिर्फ यही कि पाप और अनैतिकता में दबी मुझ जैसी पापी तक अगर मसीह अपना करुणा बढ़ाये।'

वहाँ के मसीही कार्यकर्ता उसे यूहन्ना (3:16) के बारे में बताने लगाः 'क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।' एलन बहुत ध्यान से वह सब कुछ सुन रही थी। तब घुटनों के बल गिरकर रो पड़ी। गहरी पीड़ा से याचना करने लगी कि परमेश्वर उसकी आत्मा को बचाये। साथ ही वहाँ के विश्वासी प्रार्थना में शामिल हो गये। फिर उन्होंने उसे परमेश्वर के साथ छोड़ दिया, जिसके साथ वह क्षमा पाने के लिए बिनती कर रही थी। अंत में वह शान्त हो गयी। तसल्ली पाकर धीरे से उठकर कहा, 'ओह, माँ, लम्बे समय से खोयी हुई आपकी बच्ची, आपके पास वापस आ जाएगी, वह जो क्रूसित उध्दारकर्ता की श्रेष्ठता पर विश्वास करने के द्वारा उध्दार पाई है अब लौट आयेगी।

उस रात को उसे वहाँ आश्रय दिया गया। और अगले दिन, एलन की माँ को यह समाचार बताया गया। यह खुशखबर सुनकर उसकी माँ कृतज्ञता और खुशी से फूला ना समायी। उसे साथी मसीहियों के बीच में जगह दी गई जहाँ वह मसीह में, आनंद से रह पायी। एक सुसंगत जीवन जी पायी और दूसरों को भी उसी अनमोल उध्दारकर्ता के पास अगुवाई करने का अवसर खोजती। और एलन, बाद के दिनों में हमेशा याद करती और परमेश्वर को धन्यवाद देती - उस सफेद गुलाब के तोहफे के लिए।

- हेन्री पिकरिंग कृत 100 त्रिल्लिंग टेल्स से चुनी हुई।

असंभव का परमेश्वर

चीन में सेवा की हुई मिशनरी रोजालिन्ड गोफोर्त द्वारा लिखित 'हाउ आई नो गॉड ऑन्सर्स प्रेयर्स' से संचय, निम्नलिखित कहानियाँ है। परमेश्वर, असंभव प्रतीत होने वाली चीजों को संभव कर सकते है, यह सत्य इन कहानियों में साफ स्पष्ट है।

'देख, मैं सब प्राणियों का परमेश्वर यहोवा हूँ, क्या मेरे लिए कोई काम कठिन है?' (यिर्मयाह 32:27)

'हे प्रभु यहोवा, देख, तेरे लिए कुछ भी कठिन नहीं।' (यिर्मयाह 32:17)

रास्ते से भटकी एक आत्मा।

जो मनुष्यों के लिए असंभव है वह परमेश्वर संभव करते है - इस सत्य पर निम्न लिखित दृष्टान्त है। सन 1910 इग्लैंड में 'केसेविक कन्वेन्शन' में हाजिर होने के दौरान घटित यह घटना है।

शाम की सभा से मेरे पति वापस लौटे थे। उस सभा में मैं नहीं गई थी। उन्होंने एक औरत के बारे में बताया जो बहुत परेशान होकर उनके पास आई थी। वह एक मसीही कार्यकर्ता रही है। मगर तुच्छ और हल्की रोमाचक बातों के लिए इच्छुकता उस में बढ़ रही थी। इस कारण उसके मसीही जीवन में तबाही मची थी। उस पर विजय पाने की आशा से लगातार तीन साल वह 'केसेविक' आयी। मगर वह असफल रही।

उस बेचारी औरत के लिए मेरे दिल में तरस आया। मैं उसकी मदद करना चाहती थी। मगर श्रीमान गोफोर्त को उसका नाम पता मालूम ना था। तंबू में अंधेरा होने के कारण फिर से उसे ठीक से पहचान भी नहीं पायेंगें; और साथ ही उस सम्मेलन में लगभग चार हजार लोग शामिल थे। रात भर जगी रहकर मैंने प्रभु से विनती की, अगर मैं उसे मदद करने में समर्थ हूँ तो हम दोनों का मिलन करायें, क्योंकि एक समय मैं भी उसी मामले में लगभग बर्बाद होने वाली थी।

तीन शाम गुजरने के बाद, तंबू इतनी भीड़ से भरा था कि बैठने की जगह पाना मुश्किल साबित हो रही थी। सभा आरंभ होने वाली ही थी कि मैंने ध्यान दिया कि एक औरत ने दो बार अपनी जगह बदली और फिर तीसरी बार जिधर मैं बैठी थी वहाँ आई और बैठने की जगह माँगी। दूसरों को खिसकने की विनती कर, मैंने अनिछा ही उसके लिए जगह दी। जबकि श्रीमान एफ.बी मेयर संदेश दे रहे थे, मैंने यह देखा कि वह औरत बहुत व्याकुल दिख रही थी और आँखों से आसू निकल रहे थे। मैंने उसके हाथ को थामा तो उसने मेरे हाथ को पकड़ लिया। सभा के अंत मैं ने उससे पूछा 'क्या मैं आपकी मदद कर सकती हूँ?'

'ओह नहीं', उसने जवाब दिया, 'मेरे लिए कोई आशा नहीं, वही शापित उपन्यास की गंदी किताबें हैं जो मेरी तबाही की कारण हैं।'

मैंने बहुत चकित हो कर आश्चर्य से पूछा, 'क्या आप वही हो जिसने शनिवार की रात को श्रीमान गोफोर्त से बात की थी?'

'हाँ, मगर आप कौन हो?' उसने कहा।

भावुक और बयान से बाहर मैंने अपने बारे में और मेरी प्रार्थना के बारे में बताया। बाद में कुछ महीनों तक हम प्रार्थना में सिर्फ रोते रहें। उसकी अगुवा करने में प्रभु ने मुझे उपयोग किया और उस बेचारी मसली-पिसी आत्मा को परमेश्वर ने अपनी तरफ फिर से फेर लिया। कुछ दिनों के बाद विदा होते समय, प्रभु के आनंद से उसका चेहरा खिल रहा था।

ईसाई भजन की एक पंक्ति

ग्लासगो में, एकत्रित मसीहियों को संबोधित करते समय मैं ने किसी घटना को बता रही थी। उसका मूल, किसी भजन की एक पंक्ति पर अधारित था। उस पंक्ति का जिक्र करना था मगर वह मेरे दिमाग से पूरी तरह से गायब था। उस मामले में मदद पाने की उम्मीद से वहाँ किसी एक नेता की तरफ भी मैं ने देखा। मगर उन्होंने कहा कि उसे उस भजन की कोई जानकारी नहीं। सभा की तरफ मुड़कर मुझे स्वीकार करना पड़ा कि मेरी याददाश्त ने मुझे धोखा दिया

है। व्याकुल सी महसूस करते, मैं ने कुछ हड़बड़ी से अपने संदेश का अंत किया।

नीचे बैठकर, मैंने प्रभु को पुकारा कि वे मुझे उस पंक्ति को याद दिलाये जो मुझे चाहिए थी। वहाँ इस्तेमाल की जाने वाली भजन की पुस्तक में अगर वह है तो मुझे दिखाये। उस भजन की पुस्तक को उठाया और उसे खोला। और पहली पंक्ति जिस पर मेरे आँखें पड़ी, भजन के वही वचन थे जो मुझे चाहिए थे, हाँलाकि वह एक लम्बी भजन की आखिरी पंक्ति थी। दुबारा खड़े होकर, लोगों को मैं ने अपनी प्रार्थना के बारे में और उसके उत्तर के बारे में बताया। और वह पंक्ति सुनाई। वहाँ पर छायी गंभीर निःशब्दता से साफ़ जाहिर था कि उन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। कुछ दो साल बाद चीन में आये एक नए मिशनरी ने मुझ से कहा कि वहाँ उस सभा में वह उपस्थित था और किस तरह यह छोटी सी घटना, उसके लिए एक महान आशीष रही है।

'उन्होंने तेरी दुहाई दी, और वे छुड़ा लिए गए; तुझ पर उन्होंने भरोसा किया; और वे लज्जित न हुए।' (भजन संहिता 22:5)

एक जरूरतमंद दोस्त

मैं एक रात अचानक जाग गयी थी। केनाडा में स्थित किसी जन के लिए बहुत परेशान महसूस करते जाग गयी थी। वह आभास इतना प्रबल था कि इस दोस्त को मेरी प्रार्थना की सख्त जरूरत थी। बिस्तर से उठने के लिए मुझे मजबूरी महसूस हुई और उसके पक्ष में बहुत देर तक परमेश्वर से लड़ने में व्यतीत किया। तब मुझे शान्ति महसूस हुई और मैं दुबारा सो गयी।

जैसे ही में क्वारांटीन से बाहर आयी, मैं अपने दोस्त को इस घटना के बारे में पत्र लिखा। तारीख भी लिखी। समय पर मुझे जवाब भी मिल गया। - तारीख तो उसे पता न थी मगर लगभग उसी समय पर मेरा दोस्त किसी प्रलोभन से गुजर रहा था जो बहुत भयानक महसूस हो रहा था। मगर चिट्ठी में लिखा हुआ है: 'मैं विजयी रूप से बाहर निकला, और मैं जानता हूँ कि आपकी प्रार्थनाओं ने ही मेरी मदद की है।

एक खोई हुई चाबी:

मेरे पति किसी दूर प्रांत में जागृति सभाओं का आयेजन करने गये थे। और जब वे वहाँ थे तो मैं ने अपनी बाइबल - सहेलियों के साथ मिलकर किसी बाहरी स्थान पर चार दिन प्रचार करने गये थे। वहाँ के मसीहियों ने आने के लिए निवेदन किया था। उस नाट्य-संबंधी सभाओं ने भारी भीड़ आकर्षित की। अच्छे-अच्छों को भी तार-तार करने के लिए वह चार दिन काफी है। क्योंकि हर रोज़ कई घंटों के लिए मुहजोर भीड़ का आना-जाना, ऐसे माहौल का सामना करना पड़ता। हमारे उस प्रवास के अंत में मैं थकी हुई घर लौटी। मेरा सारा ध्यान हमारे आगले पड़ाव 'वीई हैवी' पहुँचने पर लगा था। मेरे नन्हे बच्चों के साथ कुछ दिन आराम करना क्योंकि मेरे बच्चे वहाँ रहकर पढ़ाई कर रहे थे। मैं जानती थी कि उनकी एक ही झलक मेरी शक्ति को लौटा देगी।

घर जाने की हडबड़ी में मैंने किसी तरह पैसों को रखने की पेटी का चाबी खो दी। वह शुक्रवार का दिन था। और अगले दिन शनिवार दस बजे वीई हैवी जाने की रेलगाड़ी था। पैसों के लिए कई अलग-अलग लोग आ रहे थे, मगर कुछ बहाना बनाके उनको टालना पड़ा। और उस पेटी में बहुत पैसा था, चाबी को यहाँ-वहाँ छोड कर जाना भी सही नहीं था। और बिना पैसे के मैं भी तो सफर पर नहीं जा सकती थी।

रात के खाने के बाद तुरन्त मैं सब जगह चाबी ढूंढने लगी। दराजोंमें , अलमारियों में और यहाँ तक की कबूतरों के रहने के छेद में, मगर कोई फायदा नहीं हुआ। दो घंटे ढूंढने के बाद, और ढूंढने की शक्ति मुझ में ना बची। तब मैं अचानक सोचने लगी, "इस के बारे में मैंने कभी प्रार्थना नहीं की।" खाने के मेज के पास ही निश्चल खड़ी हो मैंने प्रभु को पुकारा, "हे प्रभु, आप जानते हो मुझे आराम की कितनी जरूरत है; बच्चों के देखने के लिए मैं कितना तरस रही हूँ; मुझ पर दया दिखा, उस चाबी तक मुझे ले चलो।"

फिर उसी पल इधर-उधर भटके बिना मैं सीधी भोजन कक्ष, हाल, औरतों का अतिथि कमरा पार कर, मेरे पति श्रीमान गोफोर्त जी के अध्ययन कक्ष में गई। उस कमरे में एक तरफ खडी किताबों की अलमारी के पास पहुँच गई। दरवाजा खोला और दो किताब हटाकर देखा, तो चाबी वहाँ थी। उस पल मैं ने प्रभु को इतना नजदीक मौजूद महसूस किया मानो लगभग उनकी शारीरिक उपस्थिति महसूस की। ऐसा नहीं था कि मुझे अचानक याद आया कि मैंने चाबी वहाँ रखी है, मगर वो ही मुझे वहाँ ले गए थे।

हाँ मैं जानती हूँ कि परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं।